SCIENTIFIC MIRACLES OF HINDUISM

Rig Ved (1.38.7) is one of the most scientific verse. It says that; Cloud rains in those places where the atmosphere creates **Low Pressure**. And this is exactly what the Science believes.

४६३. सत्यं त्वेषा अमवन्तो धन्वञ्चिदा रुद्रियासः। मिहं कृण्वन्त्यवाताम् ॥७॥

यह सत्य ही है कि कान्तिमान्, बलिष्ठ रुद्रदेव के पुत्र ये मरुद्गण, मरुभूमि में भी अवात (वायु शून्य) स्थिति से वर्षा करते हैं ॥७॥

Rig Ved (1.105.9) is absolutely a scientific miracle; Is it not surprising that Hindus (Aryans) thousands of year ago not only knew about several sun rays but even about **Seven Major Sun Rays**. (If we go through Bhavishya Puran, it even mentioned the name of those Seven Rays with their importance).

११५५. अमी ये सप्त रश्मयस्तत्रा मे नाभिरातता।
त्रितस्तद्वेदाप्त्यः स जामित्वाय रेभति वित्तं मे अस्य रोदसी ॥९॥

ये सात रंगो वाली सूर्य की किरणें जहाँ तक हैं, वहाँ तक हमारा नाभि क्षेत्र (पैतृक प्रभाव) फैला है। इसका ज्ञान जल के पुत्र 'त्रित' को है। अतएव प्रीतियुक्त मैत्री भाव हेतु हम प्रार्थना करते हैं। हे द्यावापृथिवि! आप हमारी इन प्रार्थनाओं के अभिप्राय को समझें ॥९॥

Rig Ved (1.105.1) tells us than Sun & Moon both revolve in their own respective orbit. Now, it's really amazing that even thousands of year ago several sages knew **about rotation of Sun, Moon, Earth** etc.

११४७. चन्द्रमा अप्स्व१न्तरा सुपर्णो धावते दिवि।
न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥१॥

अन्तरिक्ष में चन्द्रमा तथा द्युलोक में सूर्य दौड़ रहे हैं। (हे विज्ञपुरुषो !) तुम्हारा स्तर सुनहरी धार वाली विद्युत् को जानने योग्य नहीं है। हे द्युलोक एवं भूलोक ! आप हमारे भावों को समझें। (हमें उनका बोध करने की सामर्थ्य प्रदान करें) ॥१॥

Rig Ved (3.9.1) talks about the fundamental of **Latent Heat** which is responsible for holding water into clouds.

२५४०. सखायस्त्वा ववृमहे देवं मर्तास ऊतये।
अपां नपातं सुभगं सुदीदितिं सुप्रतूर्तिमनेहसम् ॥१॥

हे श्रेष्ठकर्मा, उत्तम ऐश्वर्य युक्त, निष्पाप, पापनाशक, पानी को नीचे न गिरने देने वाले अग्निदेव ! अपने संरक्षण के लिये हम मनुष्यगण मित्र भाव से आपका वरण करते हैं ॥१॥

Rig Ved (3.9.2) pray salutation to Agni-Dev (God of Fire/Heat) as a helper in **joining the objects** (elements, compounds) which is absolutely truth. Heat is essential even to combine Hydrogen and Oxygen or it even helps in process of welding with same purpose.

२५४१. कायमानो वना त्वं यन्मातृरजगन्नपः।
न तत्ते अग्ने प्रमृषे निवर्तनं यद्दूरे सन्निहाभवः ॥२॥

हे अग्ने ! आप वनों (समूहों) को आकार देने वाले हैं। आप मातृ रूप जलों के पास (शान्त होकर) जाते हैं। आपका निवृत्त होना हम सहन न करें। आप दूर होकर भी हमारे निकट प्रकट होते हैं ॥२॥

Rig Veda (3.56.2) says that Sun is the major cause of **weather change** which is right even with the vision of Science.

तिस्रो महीरुपरास्तस्थुरत्या गुहा द्वे निहिते दर्श्येका ॥२ ॥

एक स्थायी संवत्सर, वसन्त ग्रीष्मादि छः ऋतुओं को वहन करता है । ऋत (सत्य अनुशासन) पर चलने वाले तथा अति श्रेष्ठ आदित्यात्मक संवत्सर का प्रभाव सूर्य किरणों से प्राप्त होता है । सतत गतिशील एवं विस्तृत तीनों लोक क्रमशः उच्चतर स्थानों पर अवस्थित हैं । उनमें स्वर्ग और अन्तरिक्ष सूक्ष्म रूप में (अदृश्य) हैं तथा एक पृथ्वी लोक प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है ॥२ ॥

Rig Veda (1.50.11) says that **Sun Rays ends several diseases of body** which is no more a hidden truth.

५९७. उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम् ।
हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय ॥११ ॥

हे मित्रों के मित्र सूर्यदेव !आप उदित होकर आकाश में उठते हुए हृदयरोग, शरीर की कान्ति का हरण करने वाले रोगों को नष्ट करें ॥११ ॥

If we study Rig Veda (1.56.2), it clarifies that ancient Hindus knew about the knowledge of **several jewels and treasures hidden inside sea**, since long ago.

६६१. तं गूर्तयो नेमन्निषः परीणसः समुद्रं न संचरणे सनिष्यवः ।
पतिं दक्षस्य विदथस्य नू सहो गिरिं न वेना अधि रोह तेजसा ॥२ ॥

जिस प्रकार धन के इच्छुक समुद्र की ओर प्रस्थान करते हैं, उसी प्रकार हविदाता यजमान इन्द्रदेव की ओर हवि ले जाते हुए विचरण करते हैं । हे स्तोता ! जैसे नदियाँ पहाड़ को घेरती हुई चलती हैं, वैसे ही आपकी स्तुतियाँ महान् बलों के स्वामी, यज्ञ के स्वामी, संघर्षक इन्द्रदेव को अपनी तेजस्विता से आवृत कर लें ॥२ ॥

Rig Veda (1.163.3) indicates towards the theorem of **EQUIBRILLIUM OF THE FORCES** which is truly great.

१७०५. असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन ।
असि सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ॥३ ॥

हे अर्वन् ! अपने गुप्त व्रतों (जो प्रकट नहीं है, ऐसी विशेषताओं) के कारण आप यम हैं, आदित्य हैं, त्रित (तीनों लोकों अथवा तीनों आयामों) में संव्याप्त हैं । सोम (पोषक प्रवाह) के साथ आप एक रूप हैं । द्युलोक में स्थित आपके तीन बन्धन (ऋक्, यजु, साम रूप) कहे गये हैं ॥३ ॥

Rig Veda (10.146.5-7) pay salutations to **God Sun as controller** (Holder) of our system (probably planetary) which is scientifically correct. It's immense gravity of Sun which don't let earth and other planets (of our solar system) fall or move away.

हिरण्यस्तूपः सवितर्यथा त्वाङ्गिरसो जुह्वे वाजे अस्मिन् ।
एवा त्वार्चन्नवसे वन्दमानः सोमस्येवांशुं प्रति जागराहम्॥५।७॥

भा०—हे (सवितः) सूर्यवत् समस्त जगत् को संचालित करने हारे ! (आङ्गिरसः हिरण्यस्तूपः) अंग २ में रस वा बल पैदा करने वा उसके समान व्यापने वाला, हित और रमणयोग्य प्रभु की स्तुति करने वाला जन, (अस्मिन् वाजे) इस ऐश्वर्य के निमित्त (यथा त्वा जुह्वे) जिस

Rig Veda (10.22.14) describes **Sun who helps (necessary) in Agriculture**. Today we all know that without sunlight agriculture and vegetation is hardly possible.

अहस्ता यदपदी वर्धत क्षाः शचीभिर्वेद्यानाम् ।
शुष्णं परि प्रदक्षिणिद् विश्वायवे नि शिश्नथः ॥ १४ ॥

भा०—(यद्) जिस प्रकार (वेद्यानां शचीभिः) विद्वानो के नाना कर्मों द्वारा (अहस्ता अपदी) अप्रशस्त और मार्ग रहित (क्षाः वर्धत) निवास योग्य भूमि बढ़ कर विस्तृत होजाती है और तब सूर्य जिस प्रकार (विश्वायवे) सब के जीवन पालन एवं अन्नोत्पादन के लिये (प्रदक्षिणित्) खूब प्रबल (शुष्णं) शोषणकारी, ग्रीष्मताप को भी (नि शिश्नथः) मेघादि से शिथिल करता है और भूमि में अन्नादि उत्पन्न होते हैं, प्रजा पलती है, उसी प्रकार हे ऐश्वर्यवन् ! (वेद्यानां शचीभिः)

Rig Veda (1.84.15) says, Sages observed that the **light coming from Moon is nothing but the same light of Sun** {this is scientifically proven that the Moon reflects the light of Sun (star)}.

अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम् । इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥१५॥

भा०—इस पृथिवी लोक में विद्वान् जन सूर्य के किरणों को जैसे उत्तम, प्रकट, उज्ज्वल स्वरूप को जानते हैं इसी प्रकार के स्वरूप को वे चन्द्रमा के लोक के भीतर भी जानें अर्थात् वहां भी वही सूर्य-रश्मियों का प्रकाश है ।

Rig Veda (5.40.5) not only reveals that **Moon receive light from Sun** but even talks about **Eclipse** and the reason behind it. (it's totally surprising that when a large section of Europe, Greek and several other parts of the world used to believe Eclipse as God's anger, Indians (Hindus) have reached the scientific reason behind it).

Rig Veda 5.40.5:-
"O Sun! When you are blocked by the one whom you gifted your own light (moon), then earth will be surprised by the sudden darkness."

If we read **chapter 104** of **BHAVISHYA PURAN** it very clearly mention about **Seven Continents and Seven Oceans** of Earth with their names. {This all are very clear evidences which repeatedly proves that Vedas, Puran and other scriptures (Hindu) are words of God. Because it's truly astonishing that without help of any satellite image, it's nearly impossible to describe Geographical Map (with everything right in it) of entire world.}

श्रीसूतजी बोले—मुनियो ! अब मैं भूर्लोकका वर्णन करता हूँ। भूर्लोकमें जम्बू, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौञ्च, शाक और पुष्कर नामके सात महाद्वीप हैं, जो सात समुद्रोंसे आवृत हैं। एक द्वीपसे दूसरे द्वीप क्रम-क्रमसे ठीक दूने-दूने आकार एवं विस्तारवाले हैं और एक सागरसे दूसरे सागर भी दूने आकारके हैं। क्षीरोद, इक्षुरसोद, क्षारोद, घृतोद, दध्योद, क्षीरसलिल तथा जलोद—ये सात महासागर हैं। यह पृथ्वी

Now, something very big and nearly perfect. If we read Hanuman Chalisa (Holy Scripture) we get the **distance of Earth and Sun**. This is one of the most Scientific fact you can attain.

Any one who knows the Hanuman Chalisa? In Hanuman Chalisa, it is said :

"Yug sahastra yojan per Bhanu!
Leelyo taahi madhur phal janu!!

1 Yug = 12000 years
1 Sahastra = 1000

1 Yojan = 8 Miles

Yug x Sahastra x Yojan = par Bhanu
12000 x 1000 x 8 miles = 96000000 miles

1 mile = 1.6kms

96000000 miles = 96000000 x 1.6kms =
96000000 miles=1536000000 kms to Sun

Acc to Rig Veda (1.11.4), it's **Sun which brings clouds near to each other and takes them away** also. Even Science agrees with it. Importance of all these facts is even more because they all were written so long ago that most of the world had not even attained the civilisation.

सूर्य—जल-सघों का विच्छेदक, मेघों को मिलाने व भेदने वाला, अमित जलों व तेजों का धारक, सब जगत् के कर्मों का कर्त्ता, धर्त्ता, किरणों वाला वर्णनीय है।

Rig Veda (2.141.1) says, **Heat is essential to attain energy in body** which is scientifically proven that Heat Energy break downs the food particle in order to convert them into Glucose to provide Energy.

बळित्था तद्वपुषे धायि दर्शतं देवस्य भर्गः सहसो यतो जनि ।
यदीमुप ह्वरते साधते मतिर्ऋतस्य धेना अनयन्त सस्रुतः ॥ १ ॥

भा०—प्रकाशमान अग्नि का पदार्थों को परिपक्व करने का ताप पदार्थों को दिखलाने और प्रकाशित करने वाला होता है। वही तेज शरीर की रक्षा पोषण और वृद्धि के लिये भी धारण करने योग्य है यह बात इस प्रकार से सर्वथा सत्य है। अग्नि का तेज जिस बल या शक्ति से उत्पन्न हुआ करता है इसी कारण से वह शरीर में भी बल को उत्पन्न करता है।

Acc to Rig Veda (2.16.7) & (4.25.2) clouds are made up of water which also tells us that Sages (Hindu) in ancient times knew about **Evaporation** and **water cycle**.

अपो वृत्रं वव्रिवांसं पराहन्प्रावत्ते वज्रं पृथिवी सचेताः ।
प्रार्णांसि समुद्रियाण्यैनोः पतिर्भवञ्छवसा शूर धृष्णो ॥ ७ ॥

भा०—जिस प्रकार (वज्रं) अन्धकार का निवारक सूर्य या वेगवान् विद्युत् (अपः वव्रिवांसं) जलों के आवरण करने वाले मेघ को (पराहन्) विनाश करता है और (समुद्रियाणि अर्णांसि प्र एनोः) आकाश के जलों को नीचे गिरा देता है और (शवसा पतिः भवन्) जल से समस्त संसार

Searched By:- Sankalp Pandey